

छायावादी काव्य में राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की साहित्यिक अभिव्यक्ति

डॉ यशवन्त यादव

सहायक आचार्य (हिंदी)

दीनदयाल उपाध्याय राजकीय महाविद्यालय, सैदाबाद, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

सारांश

हिन्दी साहित्य में छायावाद का उदय ऐसे ऐतिहासिक कालखंड में हुआ जब भारतीय समाज औपनिवेशिक शासन, सांस्कृतिक हीनताबोध, सामाजिक पुनर्संरचना और राष्ट्रीय स्वाधीनता की आकांक्षा के बीच अपने अस्तित्व और पहचान की नई व्याख्या कर रहा था। अतः छायावादी कविता को केवल प्रकृति-सौन्दर्य, प्रेम, रहस्यवाद और आत्मानुभूति की कविता के रूप में देखना उसके व्यापक सांस्कृतिक महत्त्व को सीमित करना होगा। जयशंकर प्रसाद जी, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला जी', सुमित्रानंदन पंत जी और महादेवी जी वर्मा जी ने अपने-अपने काव्य-संसार में भारतीय इतिहास, प्रकृति, दर्शन, सांस्कृतिक स्मृति, आत्मस्वातंत्र्य, मानवीय गरिमा तथा सामाजिक मुक्ति के विविध रूपों को अभिव्यक्ति प्रदान की। इन कवियों के यहाँ राष्ट्र केवल भूगोल या राजनीतिक सत्ता का पर्याय नहीं, बल्कि मनुष्य, संस्कृति, प्रकृति, स्मृति और साझा जीवन-मूल्यों की व्यापक चेतना है। प्रस्तुत शोध-पत्र में छायावादी काव्य का राष्ट्रीय अस्मिता एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण की दृष्टि से विवेचन करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि छायावाद ने भारतीय मनुष्य को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ते हुए आधुनिक व्यक्तित्व, स्वाधीन चेतना और भविष्य के प्रति विश्वास प्रदान किया। इस प्रकार छायावाद भारतीय नवजागरण और राष्ट्रीय चेतना के विकास की एक महत्वपूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है।

बीज शब्द: छायावाद, राष्ट्रीय अस्मिता, सांस्कृतिक पुनर्जागरण, भारतीय संस्कृति, स्वाधीनता चेतना, प्रसाद जी, निराला जी, पंत जी, महादेवी जी वर्मा जी।

1. प्रस्तावना

साहित्य किसी समाज की सामूहिक चेतना, उसकी आकांक्षाओं, स्मृतियों और अंतर्द्वंद्वों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति होता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकासक्रम में छायावाद इसी अर्थ में एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक घटना है। हिन्दी कविता में इसके माध्यम से केवल अभिव्यक्ति की नई शैली या काव्यभाषा का परिवर्तन नहीं हुआ, बल्कि मनुष्य और संसार को देखने की एक नई दृष्टि विकसित हुई। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद की काव्य-पद्धति की चर्चा करते हुए उसके लाक्षणिक, प्रतीकात्मक और चित्रात्मक विधान की ओर संकेत किया है।¹ बाद के आलोचकों ने उसके भीतर निहित स्वाधीन व्यक्तित्व, नवीन मूल्यबोध तथा सांस्कृतिक चेतना को अधिक व्यापक रूप में रेखांकित किया। नामवर सिंह ने छायावाद को आधुनिक हिन्दी कविता में एक नए मूल्य-संसार की प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा है।²

छायावाद का उत्कर्ष उस समय हुआ जब भारतीय समाज राजनीतिक पराधीनता से मुक्ति के लिए संघर्ष कर रहा था। राष्ट्रीय आन्दोलन केवल सत्ता-परिवर्तन की आकांक्षा नहीं था; उसके भीतर भारतीय समाज की सांस्कृतिक पहचान, इतिहास, भाषा और आत्मगौरव की पुनर्खोज भी सक्रिय थी। औपनिवेशिक व्यवस्था ने जहाँ भारतीय समाज के राजनीतिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित किया, वहीं उसकी सांस्कृतिक आत्मछवि पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। इसलिए भारतीय नवजागरण की एक प्रमुख आवश्यकता अपने अतीत को नए अर्थों में पहचानने और वर्तमान के लिए उससे शक्ति ग्रहण करने की थी। छायावादी कविता इसी मानसिक परिस्थिति में विकसित होती

है। उसके कवियों ने राष्ट्र की चर्चा हमेशा प्रत्यक्ष राजनीतिक नारों में नहीं की, किन्तु उनके साहित्य में आत्मस्वातंत्र्य, स्वाभिमान, सांस्कृतिक गौरव, प्रकृति से आत्मीयता, इतिहास-स्मृति, मनुष्य की प्रतिष्ठा और रूढ़ियों के प्रतिरोध का जो स्वर मिलता है, वह राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है।

2. छायावाद : ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

छायावाद से पहले द्विवेदी युग की कविता में राष्ट्रीयता, सामाजिक सुधार, नैतिकता और उपयोगितावाद का स्वर अपेक्षाकृत प्रत्यक्ष था। मैथिलीशरण गुप्त की *भारत-भारती* जैसी कृति ने अतीत, वर्तमान और भविष्य के माध्यम से राष्ट्रीय आत्मबोध का एक स्पष्ट प्रारूप निर्मित किया।¹³ छायावादी कविता ने इस चेतना को समाप्त नहीं किया, बल्कि उसे अधिक आंतरिक, सांस्कृतिक और संवेदनात्मक रूप प्रदान किया। छायावाद में पहली बार व्यक्ति की अंतःचेतना इतनी तीव्रता से हिन्दी कविता के केंद्र में आती है। यह व्यक्ति केवल निजी सुख-दुःख में सीमित व्यक्ति नहीं है। उसकी स्वतंत्रता की आकांक्षा, प्रकृति के साथ उसका संबंध, स्थापित रूढ़ियों के विरुद्ध उसका प्रतिरोध और अपनी अनुभूति को व्यक्त करने का अधिकार आधुनिक भारतीय व्यक्ति के निर्माण से जुड़ा हुआ है।

नन्ददुलारे वाजपेयी ने छायावादी काव्य की विशिष्टताओं में मानवीय संवेदना, प्रकृति के प्रति नवीन दृष्टिकोण और व्यक्तित्व की प्रतिष्ठा को महत्व दिया है।¹⁴ इसी कारण छायावाद का व्यक्तिवाद सामाजिक विमुखता का पर्याय नहीं माना जा सकता। पराधीन समाज में व्यक्ति द्वारा अपनी स्वतंत्र सत्ता और अनुभूति की घोषणा स्वयं एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक परिवर्तन थी। इस काव्यधारा ने हिन्दी भाषा को भी नई अभिव्यंजना प्रदान की। संस्कृत की सांस्कृतिक शब्दावली, लोकानुभव, भारतीय मिथक, प्रकृति-बिंब और आधुनिक संवेदना के संयोग से एक ऐसी काव्यभाषा विकसित हुई जिसने अतीत और वर्तमान के बीच सर्जनात्मक संवाद स्थापित किया। इस दृष्टि से भाषा भी छायावाद में राष्ट्रीय अस्मिता की संवाहक बनती है।

3. राष्ट्रीय अस्मिता की अवधारणा और छायावाद

‘राष्ट्रीय अस्मिता’ का अर्थ केवल किसी देश के प्रति भावनात्मक लगाव से नहीं है। यह वह सामूहिक आत्मबोध है जिसके माध्यम से कोई समाज अपने इतिहास, सांस्कृतिक परम्पराओं, भाषाओं, स्मृतियों, जीवन-मूल्यों और भविष्य की आकांक्षाओं को पहचानता है। राष्ट्रीय अस्मिता स्थिर नहीं होती; वह निरन्तर पुनर्निर्मित होती रहती है। छायावादी कविता में भारतीयता का स्वर इसी गतिशील अर्थ में दिखाई देता है। यहाँ अतीत का स्मरण केवल गौरवगान नहीं है। अतीत वर्तमान को शक्ति प्रदान करने वाला सांस्कृतिक स्रोत बन जाता है। जयशंकर प्रसाद जी की इतिहास-दृष्टि हो, निराला जी का राम और तुलसी जैसे सांस्कृतिक प्रतीकों के साथ संवाद हो, पंत जी की प्रकृति और मनुष्य के बीच सामंजस्य की खोज हो या महादेवी जी की स्वाधीन नारी चेतना—इन सभी में भारतीय संस्कृति अपनी जड़ता में नहीं, बल्कि परिवर्तनशील और पुनर्सृजित रूप में सामने आती है।

रामस्वरूप चतुर्वेदी ने हिन्दी साहित्य के संवेदनात्मक विकास को सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों से जोड़ते हुए आधुनिक कविता में नए मनुष्य की खोज को महत्वपूर्ण माना है।¹⁵ छायावाद का ‘मैं’ भी इसी नए मनुष्य की अभिव्यक्ति है। वह अपनी अनुभूति को मूल्यवान मानता है, अपनी स्वतंत्रता चाहता है और सौन्दर्य तथा जीवन की अपनी व्याख्या निर्मित करता है।

4. सांस्कृतिक पुनर्जागरण और अतीत का पुनर्पाठ

सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अर्थ मृत अतीत की पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि सांस्कृतिक विरासत की नए समय में पुनर्व्याख्या है। छायावादी कवि भारतीय दर्शन, इतिहास, मिथक और साहित्यिक परम्पराओं से सामग्री ग्रहण करते हैं, किन्तु उसका यांत्रिक अनुकरण नहीं करते।

जयशंकर प्रसाद जी भारतीय इतिहास और संस्कृति की ओर बार-बार लौटते हैं। उनके लिए इतिहास केवल बीती घटनाओं का संग्रह नहीं, बल्कि वर्तमान मनुष्य में आत्मविश्वास उत्पन्न करने वाली स्मृति है। उनके साहित्य में भारतीय संस्कृति की उदारता, समन्वयशीलता और मनुष्य-केंद्रित दृष्टि विशेष रूप से उभरती है। उनकी काव्य-दृष्टि भारतीय सांस्कृतिक परम्परा को आधुनिक मनुष्य की समस्याओं से संबद्ध करती है।¹⁶

इसी प्रकार निराला जी पौराणिक तथा सांस्कृतिक प्रतीकों को नई अर्थवत्ता देते हैं। उनके राम पारम्परिक आराधना के पात्र भर नहीं रहते; वे संघर्षरत मनुष्य की शक्ति, संकल्प और आत्मविश्वास के प्रतीक बन जाते हैं। *राम की शक्ति पूजा* में पौराणिक कथानक आधुनिक संघर्षशील चेतना से जुड़ा है।¹⁷ इस पुनर्पाठ में सांस्कृतिक परम्परा जड़ श्रद्धा का विषय न होकर मनुष्य की वर्तमान संघर्ष-यात्रा की ऊर्जा बन जाती है।

5. जयशंकर प्रसाद जी : इतिहास-बोध और सांस्कृतिक आत्मगौरव

छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद जी की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना अत्यंत व्यापक है। उनके साहित्य का आधार भारतीय इतिहास, दर्शन, मिथक और मानवतावादी दृष्टि का समन्वय है। उनका राष्ट्रबोध आक्रामकता की अपेक्षा सांस्कृतिक आत्मविश्वास पर आधारित है। प्रसाद जी की प्रसिद्ध पंक्ति—“अरुण यह मधुमय देश हमारा”—में भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ एक गहरी भावात्मक राष्ट्रीयता व्यक्त होती है। यहाँ राष्ट्र को राजनीतिक मानचित्र के रूप में नहीं, बल्कि मनुष्य और प्रकृति के जीवंत संबंध के रूप में अनुभव किया गया है। प्रकृति के सौन्दर्य में मातृभूमि के प्रति आत्मीयता और सांस्कृतिक निकटता निहित है। प्रसाद जी के साहित्य में इतिहास के गौरवपूर्ण प्रसंगों का स्मरण वर्तमान की निष्क्रियता से पलायन नहीं है। वह राष्ट्रीय आत्मविश्वास के पुनर्निर्माण का साधन है। औपनिवेशिक परिस्थिति में भारतीयों को अपनी ऐतिहासिक उपलब्धियों, दर्शन और सांस्कृतिक शक्ति का बोध कराना मानसिक मुक्ति की प्रक्रिया का एक हिस्सा था।

कामायनी में यह दृष्टि और भी व्यापक रूप ग्रहण करती है। मनु, श्रद्धा और इड़ा के माध्यम से प्रसाद जी मानव-जीवन में भावना, बुद्धि, कर्म और समरसता के प्रश्न उठाते हैं।¹⁸ यह कृति किसी संकीर्ण राष्ट्रीयता तक सीमित नहीं है; उसमें भारतीय दार्शनिक परम्परा से उत्पन्न विश्वमानवीय दृष्टि सक्रिय है। यही छायावादी राष्ट्रीयता की विशेषता भी है—भारतीय अस्मिता की स्थापना मानवता के निषेध पर नहीं, बल्कि उसके विस्तार पर आधारित है। प्रसाद जी की सांस्कृतिक दृष्टि में अतीत प्रेरणा देता है, किन्तु भविष्य का निर्माण वर्तमान मनुष्य को करना है। इसलिए उनके यहाँ सांस्कृतिक पुनर्जागरण स्मृति और सृजन दोनों की प्रक्रिया है।

6. निराला जी : स्वाधीन चेतना, विद्रोह और सांस्कृतिक पुनर्निर्माण

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला जी’ की काव्य-चेतना में राष्ट्रीय अस्मिता का सबसे महत्वपूर्ण आधार स्वतंत्रता है। यह स्वतंत्रता राजनीतिक स्तर तक सीमित नहीं रहती; वह व्यक्ति, साहित्य, समाज और भाषा सभी क्षेत्रों की स्वतंत्रता से जुड़ी है।

रामविलास शर्मा ने निराला जी के साहित्य को उनके युग की सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रीय परिस्थितियों से गहरे रूप में जोड़कर देखा है।¹⁹ निराला जी की कविता में रूढ़ि, अन्याय, विषमता और मानसिक दासता के विरुद्ध जो प्रतिरोध मिलता है, वह राष्ट्रीय मुक्ति की व्यापक अवधारणा से संबद्ध है।

उनका आह्वान—“जागो फिर एक बार”—भारतीय मानस को निष्क्रियता से बाहर आने की प्रेरणा देता है। यह जागरण केवल राजनीतिक संघर्ष के अर्थ में नहीं है; यह मनुष्य के भीतर सुप्त शक्ति, साहस और स्वाभिमान को जगाने की आकांक्षा भी है।

राम की शक्ति पूजा निराला जी की सांस्कृतिक पुनर्व्याख्या का श्रेष्ठ उदाहरण है। राम को यहाँ विजय सहज रूप से प्राप्त नहीं होती। उन्हें संघर्ष, संशय, साधना और आत्मबल की प्रक्रिया से गुजरना पड़ता है।¹⁰ इस प्रकार पौराणिक कथा आधुनिक मनुष्य के संघर्ष की प्रतीकात्मक कथा बन जाती है। शक्ति बाहर से प्राप्त होने वाला वरदान मात्र नहीं है; वह साधना के माध्यम से अर्जित आंतरिक सामर्थ्य है। निराला जी की सांस्कृतिक चेतना का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष सामाजिक न्याय है। वह तोड़ती पत्थर, भिक्षुक जैसी कविताओं में उपेक्षित मनुष्य साहित्य के केंद्र में आता है।¹¹ यदि राष्ट्र की कल्पना केवल गौरवपूर्ण अतीत के आधार पर की जाए और वर्तमान समाज के वंचित मनुष्य उसमें अनुपस्थित हों, तो वह राष्ट्रीय अस्मिता अधूरी होगी। निराला जी इस अपूर्णता को तोड़ते हैं। उनके यहाँ राष्ट्र का अर्थ सामान्य मनुष्य की गरिमा और उसकी मुक्ति से भी है। उनकी कविता में शक्ति, विद्रोह, करुणा और सांस्कृतिक स्मृति का जो सम्मिलन मिलता है, वह छायावादी राष्ट्रीय चेतना को अधिक जनोन्मुख बनाता है।

7. सुमित्रानंदन पंत जी : प्रकृति, सौन्दर्य और भारतीय आत्मबोध

सुमित्रानंदन पंत जी को सामान्यतः प्रकृति के कवि के रूप में स्मरण किया जाता है, किन्तु उनकी प्रकृति-चेतना में भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता का एक गहरा पक्ष निहित है। पल्लव की कविताओं में प्रकृति केवल दृश्य-सौन्दर्य नहीं, बल्कि मनुष्य की अंतश्चेतना की सहभागी है।¹² भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में प्रकृति और मनुष्य के संबंध को विरोध के रूप में नहीं, बल्कि सहअस्तित्व के रूप में देखने की दीर्घ परम्परा रही है। पंत जी आधुनिक संवेदना के स्तर पर इसी आत्मीयता का पुनर्सृजन करते हैं। पर्वत, वन, बादल, उषा, पुष्प और हिमालय उनके यहाँ बाह्य दृश्य नहीं रहते; वे मानवीय संवेदनाओं के प्रतीक बन जाते हैं।

विशेषतः हिमालय छायावादी काव्य में केवल भौगोलिक पर्वत नहीं है। वह स्थैर्य, विराटता, सांस्कृतिक स्मृति और भारतीय भू-दृश्य की विशिष्ट पहचान का प्रतीक बनता है। पंत जी की प्रकृति-कविता भारतीय भूगोल को भावात्मक भूगोल में रूपान्तरित करती है। मनुष्य अपने परिवेश को केवल देखता नहीं, बल्कि उसमें अपने सामूहिक अस्तित्व की अनुभूति करता है।

पंत जी के काव्य का विकास आगे चलकर मानवतावाद, सामाजिक चेतना और युगबोध की ओर होता है। युगांत और बाद की रचनाओं में बदलते सामाजिक जीवन के प्रति उनकी सक्रियता स्पष्ट है।¹³ इससे यह प्रमाणित होता है कि छायावादी सौन्दर्य-बोध सामाजिक जीवन से पूर्णतः अलग नहीं था। पंत जी के लिए सौन्दर्य अन्ततः अधिक मानवीय और सामंजस्यपूर्ण संसार की खोज से जुड़ जाता है।

8. महादेवी जी वर्मा जी : स्वाधीन व्यक्तित्व और सांस्कृतिक अस्मिता

महादेवी जी वर्मा जी की कविता को प्रायः वेदना, विरह और आध्यात्मिक प्रेम के संदर्भ में पढ़ा जाता है, किन्तु उनकी रचनात्मक चेतना में व्यक्ति की स्वतंत्र सत्ता अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी कविता का एकाकी स्वर वास्तव में उस संवेदनशील आत्मा का स्वर है जो स्थापित सीमाओं के भीतर अपने स्वतंत्र अस्तित्व की खोज करती है। यामा, दीपशिखा और अन्य काव्य-संग्रहों में महादेवी जी के यहाँ आत्मसम्मान, आंतरिक स्वतंत्रता और साधना की चेतना दिखाई देती है।¹⁴ 'दीप' का प्रतीक उनके साहित्य में विशेष अर्थ रखता है। वह अंधकार के बीच स्वयं जलकर प्रकाश उत्पन्न करने वाली चेतना का प्रतीक बन जाता है। ऐसी चेतना सांस्कृतिक पुनर्जागरण की मूल शर्त है, क्योंकि कोई समाज तभी पुनर्जागृत हो सकता है जब उसके व्यक्ति आत्मबोध और स्वाभिमान से सम्पन्न हों।

महादेवी जी के गद्य में यह चेतना और अधिक सामाजिक रूप ग्रहण करती है। श्रृंखला की कड़ियाँ में भारतीय स्त्री की पराधीन स्थिति, उसकी सामाजिक भूमिकाओं और स्वाधीन अस्तित्व के प्रश्नों का गंभीर विवेचन मिलता है।¹⁵ यहाँ राष्ट्रीय पुनर्जागरण का एक अत्यंत आवश्यक पक्ष सामने आता है—यदि समाज की आधी आबादी स्वतंत्र और सम्मानपूर्ण जीवन से वंचित है, तो सांस्कृतिक पुनर्जागरण पूर्ण नहीं हो सकता। इस दृष्टि से महादेवी जी की स्त्री-चेतना राष्ट्रीय अस्मिता के क्षेत्र को विस्तृत करती है। राष्ट्र केवल पुरुष-वीरों,

राजनीतिक संघर्षों अथवा ऐतिहासिक घटनाओं से निर्मित नहीं होता; उसमें स्त्री का अनुभव, उसकी स्वतंत्रता और उसका सांस्कृतिक योगदान भी उतना ही आवश्यक है।

महादेवी जी भारतीय परम्परा को अस्वीकार नहीं करतीं, बल्कि उसके भीतर स्त्री की स्थिति का आलोचनात्मक परीक्षण करती हैं। यही आधुनिक सांस्कृतिक पुनर्जागरण की विशेषता है—परम्परा का सम्मान, परन्तु उसके अन्यायपूर्ण पक्षों के प्रति प्रश्नाकुलता।

9. छायावादी काव्य में प्रकृति और राष्ट्र का भावात्मक भूगोल

छायावाद में प्रकृति की अत्यधिक उपस्थिति को कभी-कभी पलायनवाद से जोड़ दिया गया, किन्तु प्रकृति का एक दूसरा सांस्कृतिक अर्थ भी है। किसी राष्ट्र की पहचान केवल उसके राजनीतिक इतिहास से नहीं बनती; उसके पर्वत, नदियाँ, ऋतुएँ, वन, धरती और प्राकृतिक दृश्य भी सामूहिक स्मृति का हिस्सा होते हैं। प्रसाद जी, पंत जी, निराला जी और महादेवी जी सभी के साहित्य में भारतीय प्रकृति विविध रूपों में उपस्थित है। प्रकृति के प्रति यह आत्मीयता मनुष्य को अपनी भूमि से भावनात्मक संबंध प्रदान करती है। डॉ. नगेन्द्र ने छायावादी काव्य में प्रकृति के मानवीकरण और भावात्मक रूपांतरण को उसकी महत्वपूर्ण प्रवृत्ति माना है।¹⁶ जब हिमालय केवल पर्वत न रहकर धैर्य और विराटता का प्रतीक बनता है, जब उषा नवजागरण की संभावना का बोध कराती है और जब धरती मातृत्व से जुड़ती है, तब प्राकृतिक दृश्य राष्ट्रीय चेतना के प्रतीकों में बदल जाते हैं। इस अर्थ में छायावादी प्रकृति-चित्रण भारतीय भू-दृश्य का सांस्कृतिक रूपान्तरण है।

10. भाषा, मिथक और सांस्कृतिक स्मृति

राष्ट्रीय अस्मिता के निर्माण में भाषा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। छायावादी कवियों ने खड़ी बोली हिन्दी को ऐसी काव्यात्मक शक्ति प्रदान की जिसमें गहन भावानुभूति, दर्शन, सौन्दर्य, संगीत और प्रतीकात्मकता व्यक्त की जा सकती थी।

आचार्य शुक्ल ने आधुनिक हिन्दी कविता की भाषा और अभिव्यक्ति में हुए परिवर्तन को साहित्यिक विकास की महत्वपूर्ण प्रक्रिया के रूप में देखा है।¹⁷ छायावादी कवियों ने संस्कृतनिष्ठ शब्दावली का व्यापक प्रयोग किया, किन्तु साथ ही भाषा में संगीतात्मकता और नवीन बिंब-विधान को भी विकसित किया। यह संस्कृतनिष्ठता केवल भाषिक सजावट नहीं थी; उसके माध्यम से आधुनिक हिन्दी अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा से भी संवाद स्थापित कर रही थी। इसी प्रकार मिथकों का प्रयोग छायावाद में सांस्कृतिक स्मृति को सक्रिय करता है। राम, शक्ति, मनु, श्रद्धा और अन्य सांस्कृतिक प्रतीक अतीत से आते हैं, किन्तु आधुनिक संदर्भों में नए अर्थ ग्रहण करते हैं। मिथक इस प्रकार बीते हुए समय का अवशेष न होकर वर्तमान की समस्याओं को समझने का माध्यम बन जाता है। हजारीप्रसाद जी द्विवेदी ने भारतीय साहित्यिक परम्परा को निरन्तर विकासशील और अनेक सांस्कृतिक धाराओं के समन्वय से निर्मित माना है।¹⁸ छायावादी काव्य इसी विकासशील परम्परा का आधुनिक रूप है।

11. स्वाधीन व्यक्तित्व और राष्ट्रीय मुक्ति

छायावाद की सबसे उल्लेखनीय उपलब्धियों में से एक व्यक्ति की प्रतिष्ठा है। पूर्ववर्ती नैतिक और उपदेशात्मक काव्य की तुलना में छायावादी कवि अपनी अनुभूति, कल्पना, प्रेम, वेदना और स्वप्न को स्वतंत्र साहित्यिक मूल्य प्रदान करता है। नामवर सिंह के अनुसार छायावादी कविता में व्यक्तित्व की यह प्रतिष्ठा नए सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी हुई थी।¹⁹ राजनीतिक पराधीनता के युग में स्वतंत्र व्यक्तित्व की कल्पना स्वयं राष्ट्रीय मुक्ति की मानसिक तैयारी का एक रूप मानी जा सकती है। जो व्यक्ति अपनी अनुभूति और विवेक की स्वतंत्रता को स्वीकार करता है, वह बाहरी और आंतरिक दासता के विरुद्ध भी अधिक सजग होता है। निराला जी में यह

स्वतंत्रता विद्रोह के रूप में दिखाई देती है, महादेवी जी में आत्मसम्मान और आंतरिक स्वाधीनता के रूप में, पंत जी में सौन्दर्य और मुक्त कल्पना के रूप में तथा प्रसाद जी में सांस्कृतिक आत्मविश्वास और समरस व्यक्तित्व के रूप में। इसलिए छायावाद का व्यक्तिवाद केवल निजी संसार में वापसी नहीं है। वह आधुनिक भारतीय मनुष्य को स्वतंत्र 'स्व' के रूप में पहचानने की साहित्यिक प्रक्रिया है।

12. राष्ट्रीयता से मानवता की ओर

छायावादी राष्ट्रीय चेतना की एक विशेष उपलब्धि उसका व्यापक मानवतावादी स्वर है। वह राष्ट्रीय अस्मिता को दूसरे समाजों के प्रति द्वेष पर आधारित नहीं करती। भारतीय संस्कृति का गौरव यहाँ व्यापक मानवीय मूल्यों के माध्यम से व्यक्त होता है। प्रसाद जी की *कामायनी* मनुष्य की समग्रता और समरसता की तलाश करती है। पंत जी का काव्य धीरे-धीरे विश्वमानव और मानवतावादी चिंतन की ओर बढ़ता है। महादेवी जी की करुणा मनुष्य से आगे पशु-पक्षियों और समस्त जीव-जगत तक फैलती है। निराला जी सामाजिक रूप से उपेक्षित और पीड़ित मनुष्य को गरिमा प्रदान करते हैं। रामविलास शर्मा ने आधुनिक हिन्दी साहित्य के राष्ट्रीय चरित्र को सामाजिक परिवर्तन तथा जनजीवन से जोड़कर समझने पर बल दिया है।²⁰ इस दृष्टि से राष्ट्रप्रेम की सार्थकता तभी है जब उसमें सामान्य मनुष्य के जीवन, सम्मान और अधिकार की चिंता शामिल हो। छायावाद का सांस्कृतिक पुनर्जागरण इसीलिए केवल अतीत के गौरव की पुनर्प्राप्ति नहीं, बल्कि अधिक स्वतंत्र, संवेदनशील और मानवीय भविष्य की खोज भी है।

13. नारी-चेतना और राष्ट्रीय पुनर्जागरण

भारतीय राष्ट्रीय पुनर्जागरण की चर्चा स्त्री की स्थिति के बिना अधूरी है। आधुनिकता, शिक्षा और स्वाधीनता के प्रश्न जैसे-जैसे भारतीय समाज में प्रमुख हुए, स्त्री-अस्मिता का प्रश्न भी साहित्य में अधिक मुखर हुआ। महादेवी जी वर्मा जी इस संदर्भ में छायावादी युग की अत्यंत महत्वपूर्ण लेखिका हैं। उनके साहित्य में स्त्री को केवल करुणा की पात्र के रूप में नहीं, बल्कि चेतन, विवेकशील और स्वतंत्र व्यक्तित्व के रूप में देखने की मांग है। *शृंखला की कड़ियाँ* इस दृष्टि से आधुनिक हिन्दी में स्त्री-अस्मिता पर गंभीर चिंतन का महत्वपूर्ण ग्रंथ है।²¹

निराला जी की कई रचनाओं में भी स्त्री के श्रम, संघर्ष और सामाजिक स्थिति के प्रति संवेदनशील दृष्टि मिलती है। इस प्रकार छायावादी सांस्कृतिक पुनर्जागरण पारम्परिक स्त्री-प्रतिमानों से आगे बढ़कर स्त्री की स्वतंत्र मानवीय सत्ता को पहचानने की दिशा में भी योगदान देता है।

14. सांस्कृतिक परम्परा और आधुनिकता का समन्वय

छायावाद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें परम्परा और आधुनिकता एक-दूसरे के पूर्ण विरोधी नहीं हैं। छायावादी कवि भारतीय इतिहास, दर्शन और मिथक से गहरे जुड़े रहते हैं, परन्तु साथ ही वैयक्तिक स्वतंत्रता, नवीन सौन्दर्यबोध, स्त्री-चेतना और सामाजिक परिवर्तन जैसे आधुनिक प्रश्न भी उठाते हैं।

बच्चन सिंह ने आधुनिक हिन्दी साहित्य के इतिहास को केवल काव्य-प्रवृत्तियों के क्रम में न देखकर बदलती सामाजिक चेतना के संदर्भ में पढ़ने की आवश्यकता रेखांकित की है।²² इस दृष्टि से छायावाद भारतीय आधुनिकता के एक विशिष्ट रूप का प्रतिनिधित्व करता है। यह आधुनिकता अपनी परम्परा को पूर्णतः नकारकर नहीं, बल्कि उसे पुनर्परिभाषित करके आगे बढ़ती है। प्रसाद जी इतिहास से आधुनिक मनुष्य के लिए आत्मविश्वास ग्रहण करते हैं; निराला जी मिथक को संघर्ष का आधुनिक प्रतीक बनाते हैं; पंत जी प्रकृति के

माध्यम से आधुनिक मनुष्य की संवेदना का विस्तार करते हैं और महादेवी जी परम्परा के भीतर स्त्री की स्वतंत्र सत्ता का प्रश्न उपस्थित करती हैं। यही छायावाद का सांस्कृतिक पुनर्जागरण है।

15. छायावादी राष्ट्रीय चेतना की सीमाएँ और उपलब्धियाँ

छायावाद का मूल्यांकन करते समय उसकी सीमाओं को भी समझना आवश्यक है। आरम्भिक छायावादी कविता में ग्रामीण जीवन, औद्योगिक श्रमिक, जातिगत विषमता और तत्कालीन आर्थिक संघर्षों का प्रत्यक्ष चित्रण अपेक्षाकृत कम दिखाई देता है। इसी कारण बाद के प्रगतिवादी आलोचकों ने उसके व्यक्तिवाद और सौन्दर्यवाद पर प्रश्न उठाए।

किन्तु केवल इसी आधार पर उसके राष्ट्रीय-सांस्कृतिक योगदान को अस्वीकार करना उचित नहीं होगा। साहित्य में सामाजिक परिवर्तन केवल प्रत्यक्ष राजनीतिक कथनों से नहीं आता; संवेदना और आत्मबोध में परिवर्तन भी दीर्घकालीन सामाजिक बदलाव का आधार बनता है।

छायावाद ने हिन्दी कविता को स्वतंत्र कल्पना, आत्मानुभूति, सौन्दर्यबोध और भाषिक सृजनात्मकता प्रदान की। उसने औपनिवेशिक परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति को हीनता के स्थान पर आत्मविश्वास के साथ देखने की दृष्टि विकसित की। नन्ददुलारे वाजपेयी ने छायावादी कवियों की इस नवीन भावभूमि को आधुनिक हिन्दी साहित्य की निर्णायक उपलब्धियों में माना है।²³

छायावाद ने राष्ट्रवाद को केवल राजनीतिक घोषणाओं की भाषा में व्यक्त नहीं किया। उसने व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वतंत्र और सांस्कृतिक रूप से आत्मविश्वासी बनाने का प्रयास किया। यही उसका स्थायी योगदान है।

16. समकालीन संदर्भ में छायावादी सांस्कृतिक चेतना

आज के वैश्वीकरण और तीव्र सामाजिक परिवर्तन के समय में पहचान का प्रश्न पुनः महत्वपूर्ण हुआ है। ऐसी स्थिति में छायावादी काव्य हमें यह समझने में सहायता करता है कि सांस्कृतिक अस्मिता का अर्थ बंद और संकीर्ण पहचान नहीं होना चाहिए। प्रसाद जी की समरसता, निराला जी की स्वाधीनता और सामाजिक करुणा, पंत जी का प्रकृति-बोध तथा महादेवी जी की संवेदनशीलता और स्त्री-स्वातंत्र्य—ये सभी ऐसे मूल्य हैं जो भारतीयता को व्यापक मानवीय चेतना से जोड़ते हैं। विशेष रूप से प्रकृति के प्रति छायावादी दृष्टि वर्तमान पर्यावरणीय संकट के संदर्भ में भी नए अर्थ ग्रहण करती है। प्रकृति को उपभोग की वस्तु न मानकर आत्मीय सहचर समझना भारतीय सांस्कृतिक दृष्टि की उस धारा की याद दिलाता है जिसमें मानव और प्रकृति परस्पर निर्भर हैं। इसी प्रकार बहुलता और समन्वय की सांस्कृतिक चेतना भी वर्तमान समय में छायावादी साहित्य के पुनर्पाठ को सार्थक बनाती है। भारतीय अस्मिता की शक्ति उसकी विविधता और निरन्तर आत्मपरिवर्तन की क्षमता में है।

17. निष्कर्ष

छायावादी काव्य हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय अस्मिता और सांस्कृतिक पुनर्जागरण की एक सूक्ष्म, गहन और बहुआयामी अभिव्यक्ति है। इसे केवल स्वप्न, रहस्य, प्रेम, प्रकृति अथवा व्यक्तिवाद की काव्यधारा समझना उसके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व को सीमित कर देता है। छायावादी कवियों ने उस समय भारतीय मनुष्य के आत्मविश्वास को स्वर दिया जब राजनीतिक पराधीनता के साथ सांस्कृतिक हीनताबोध भी एक बड़ी चुनौती थी। उन्होंने भारतीय अतीत को पुनः स्मरण किया, किन्तु उसे जड़ गौरवगान नहीं बनाया। प्रसाद जी ने इतिहास और दर्शन के माध्यम से सांस्कृतिक आत्मविश्वास की प्रतिष्ठा की; निराला जी ने परम्परा को विद्रोही और संघर्षशील आधुनिक

चेतना से जोड़ा; पंत जी ने प्रकृति और मनुष्य के आत्मीय संबंध के माध्यम से भारतीय भू-दृश्य को सांस्कृतिक संवेदना दी; और महादेवी जी वर्मा जी ने आत्मस्वातंत्र्य, करुणा तथा स्त्री-अस्मिता के माध्यम से राष्ट्रीय पुनर्जागरण की अवधारणा को व्यापक बनाया। छायावादी राष्ट्रीयता की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह राष्ट्र को केवल सत्ता, सीमा या राजनीतिक प्रतीकों तक सीमित नहीं रखती। उसके भीतर मनुष्य की स्वतंत्रता, सांस्कृतिक स्मृति, भाषा, प्रकृति, स्त्री की गरिमा, सामाजिक करुणा और व्यापक मानवतावाद का समावेश है। इस अर्थ में छायावाद भारतीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की साहित्यिक चेतना है। उसने अतीत और आधुनिकता, व्यक्ति और समाज, प्रकृति और मनुष्य तथा राष्ट्रीयता और मानवता के बीच संवाद स्थापित किया। उसकी राष्ट्रीय अस्मिता आत्मविश्वास पर आधारित है, और उसका सांस्कृतिक पुनर्जागरण परम्परा के पुनरुत्थान से अधिक उसके सर्जनात्मक पुनर्निर्माण का प्रयास है। यही कारण है कि छायावादी काव्य आज भी भारतीय साहित्यिक और सांस्कृतिक अस्मिता को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रस्तुत करता है।

संदर्भ सूची :

- 1 शुक्ल, रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. काशी: नागरी प्रचारिणी सभा।
- 2 सिंह, नामवर. छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 3 गुप्त, मैथिलीशरण. भारत-भारती. नई दिल्ली: साहित्य सदन/प्रचलित भारतीय संस्करण।
- 4 वाजपेयी, नन्ददुलारे. हिन्दी साहित्य : बीसवीं शताब्दी. प्रयाग: लोकभारती प्रकाशन।
- 5 चतुर्वेदी, रामस्वरूप. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
- 6 प्रसाद जी, जयशंकर. लहर. वाराणसी: भारतीय प्रकाशन परम्परा के विभिन्न संस्करण।
- 7 त्रिपाठी 'निराला जी', सूर्यकांत. अनामिका. इलाहाबाद: भारतीय भण्डार के विभिन्न संस्करण।
- 8 प्रसाद जी, जयशंकर. कामायनी. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
- 9 शर्मा, रामविलास. निराला जी की साहित्य साधना, खण्ड 1-3. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 10 त्रिपाठी 'निराला जी', सूर्यकांत. "राम की शक्ति पूजा", अनामिका।
- 11 त्रिपाठी 'निराला जी', सूर्यकांत. परिमल. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन के प्रचलित संस्करण।
- 12 पंत जी, सुमित्रानंदन. पल्लव. प्रयाग: भारतीय ज्ञानपीठ/प्रचलित भारतीय संस्करण।
- 13 पंत जी, सुमित्रानंदन. युगांत. नई दिल्ली: भारतीय प्रकाशन के प्रचलित संस्करण।
- 14 वर्मा जी, महादेवी जी. यामा. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
- 15 वर्मा जी, महादेवी जी. श्रृंखला की कड़ियाँ. नई दिल्ली/प्रयागराज: भारतीय संस्करण।
- 16 नगेन्द्र. छायावाद. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाउस।
- 17 शुक्ल, रामचन्द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास. काशी: नागरी प्रचारिणी सभा।
- 18 द्विवेदी, हजारीप्रसाद जी. हिन्दी साहित्य : उद्भव और विकास. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 19 सिंह, नामवर. छायावाद. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 20 शर्मा, रामविलास. निराला जी की साहित्य साधना, खण्ड 2. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
- 21 वर्मा जी, महादेवी जी. श्रृंखला की कड़ियाँ. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
- 22 सिंह, बच्चन. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
- 23 वाजपेयी, नन्ददुलारे. आधुनिक साहित्य. प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।